ॐ

पंचदशी - विषयानन्द

√ **अथात्र विषयानन्दो ब्रह्मानन्दांश रूपभाक्।**
निरूप्यते द्वारभूतः तदंशत्वं श्रुतिर्जगौ।।१।।

• अब यहां ब्रह्मानन्द के अंश रूप विषयानन्द का निरूपण करते है। यह ब्रह्मज्ञान का द्वार है। श्रुति में इसे ब्रह्मानन्द का अंश कहा गया है।

√ **एषोऽस्य परमानन्दो योऽखण्डैकरसात्मकः।**
अन्यानि भूतान्येतस्य मात्रामेवोपभुंजते।।२।।

• जो अखण्ड एकरसात्मक है वही इस जीव का स्वरूप परमानन्द है। अन्य प्राणी इसके अंश मात्र को भोगते है।

√ **शान्ता घोरास्तथा मूढा मनसो वृत्तयस्त्रिधा।**
वैराग्यं क्षान्तिरौदार्यम् इत्याद्याः शान्तवृत्तयः।।३।।

• मन की तीन प्रकार की वृत्तियां होती है - शान्त, घोर, और मूढ। इनमें वैराग्य, क्षान्ति, उदारता आदि शान्त वृत्तियां हैं।

√ **तृष्णा स्नेहो रागलोभौ इत्याद्याः घोरवृत्तयः।**
संमोहो भयमित्याद्याः कथिता मूढवृत्तयः।।४।।

• तृष्णा, स्नेह, राग, और लोभ इत्यादि घोर वृत्तियॉं है और संमोह, भय इत्यादि मूढ वृत्तिया कही गयी है।

√ **वृत्तिष्वेतासु सर्वासु ब्रह्मणश्चित्स्वभावता।**
प्रतिबिम्बति शान्तासु सुखं च प्रतिबिम्बति।।५।।

• इन सभी वृत्तियों में ब्रह्म की चिद्रूपता प्रतिबिम्बित होती है, किन्तु केवल शान्त वृत्तियों में उसका सुख प्रतिबिम्बित होता है।

√ **रूपं रूपं बभूवासौ प्रतिरूप इति श्रुतिः।**
उपमा सूर्यकेत्यादि सूत्रयामास सूत्रकृत्।।६।।

• श्रुति कहती है कि यह ब्रह्म प्रत्येक रूप व देह में प्रतिबिम्बित हुआ। सूत्रकार ने भी उसे जल में प्रतिबिम्बित सूर्य की उपमा ब्रह्मसूत्र में दी है।

√ **एक एव हि भूतात्मा भूते भूते व्यवस्थितः।**
एकधा बहुधा चैव दृश्यते जलचन्द्रवत्।।७।।

• एक ही भूतात्मा भूतों में स्थित है। वह जल में चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब की भांति एक रूप में और अनेक रूप में भी दिखाई देता है।

√ **जले प्रविष्टश्चन्द्रोऽयम् अस्पष्टः कलुषे जले।**
विस्पष्टो निर्मले तद्वद् द्वेधा ब्रह्मापि वृत्तिषु।।८।।

• जल में प्रविष्ट यह चन्द्रमा जैसे मलिन जल में अस्पष्ट और निर्मल जल में विस्पष्ट है, उसी प्रकार ब्रह्म भी वृत्तियों में दो प्रकार का दिखाई देता है।

√ **घोरमूढासु मालिन्यात् सुखांशश्च तिरोहितः।**
ईषन् नैर्मल्यतस्तत्र चिदंशप्रतिबिम्बनम्।।९।।

• घोर और मूढ़ वृत्तियों में मलिनता के कारण ब्रह्म का आनन्द का अंश छिपा रहता है, तथापि थोड़ी निर्मलता के कारण उनमें चेतना का अंश प्रतिबिम्बित होता है।

√ **यद्वापि निर्मले नीरे वह्नरौष्ण्यस्य संक्रमः।**
न प्रकाशस्य तद्वत्स्यात् चिन्मात्रोद्भूतिरेव च ।।१०।।

• अथवा जैसे निर्मल जल में भी अग्नि की उष्णता का प्रवेश होता है किन्तु उसके प्रकाश का नहीं होता, वैसे ही घोर और मूढ़ वृत्तियों में ब्रह्म की चेतना ही उद्भूत होती है, आनन्द नहीं।

√ **काष्ठे त्वौष्ण्यप्रकाशौ द्वौ उद्भवं गच्छतो यथा।**
शान्तासु सुखचैतन्ये तथैवोद्भूतिमाप्नुतः।।११।।

• किन्तु जैसे काष्ठ में अग्नि की उष्णता और प्रकाश दोनों का उद्भव होता है, वैसे ही शान्त वृत्तियों में चेतना और आनन्द दोनों प्रकट होते है।

√ **वस्तुस्वभावमाश्रित्य व्यवस्था तूभयोः समा।**
अनुभूत्यनुसारेण कल्प्यते हि नियामकम्।।१२।।

• वस्तु के स्वभाव का आश्रय लेकर दोनों की व्यवस्था तो एक समान है क्योकि अनुभूति के अनुसार ही नियामक कल्पना होती है।

√ **न घोरासु न मूढ़ासु सुखानुभव ईक्ष्यते।**
शान्तास्वपि क्वचित्कश्चित् सुखातिशय ईक्ष्यताम्।।१३।।

• घोर और मूढ़ वृत्तियों में सुख का कोई अनुभव नही होता, किन्तु शान्त वृत्तियों में कभी कम और कभी अधिक सुख अनुभवमें आता है।

√ **गृहक्षेत्रादिविषये यदा कामो भवेत्तदा।**
राजसस्यास्य कामस्य घोरत्वात्तत्र नो सुखम्।।१४।।

• जब गृहक्षेत्र आदि विषयों की कामना होती है तो वह कामना रजोगुणी होने से घोर होती है और उसमें सुख नही होता।

√ **सिद्धेन्न वेत्यस्ति दुःखम् असिद्धौ तद्विवर्धते।**
प्रतिबन्धे भवेत्क्रोधो द्वेषो वा प्रतिकूलतः।।१५।।

• यह कार्य सिद्ध होगा या नहीं – ऐसा संशय रहने पर दुःख होता है और कार्य सिद्ध न होने पर दुःख बढ़ता है। बाधा पडने पर क्रोध आता है और विरोध होने पर द्वेष बढ़ता है।

√ **अशक्यश्चेत्प्रतीकारो विषादः स्यात्स तामसः।**
क्रोधादिषु महद्दुःखं सुखशंकापि दूरतः।।१६।।

• यदि विरोध का निवारण सम्भव न हुआ तो विषाद उत्पन्न होता है। वह तमोगुणी वृत्ति है। क्रोध आदि में महादुःख होता है। इसलिए उसमें सुख की संभावना दूर तक नही रहती।

√ **काम्य लाभे हर्षवृत्तिः शान्ता तत्र महत्सुखम्**
भोगे महत्तरं लाभ प्रसक्तावीषदेव हि।।१७।।

• काम्य वस्तु के लाभ से हर्षवृत्ति उत्पन्न होती है। वह शान्तवृत्ति है। इसमें महत् सुख है। उसके भोगने पर महत्तर सुख होता है। उसके लाभ की आशा में थोडा सुख होता है।

√ **महत्तमं विरक्तौ तु विद्यानन्दे तदीरितम्।**
एवं क्षान्तो तथौदार्ये क्रोधलोभनिवारणात्।।१८।।

• वैराग्य में महत्तम सुख है, उसका वर्णन विद्यानन्द में हुआ है। इस प्रकार क्षान्ति और उदारता की वृत्तियों में क्रोध और लोभ की वृत्तियों का निवारण हो जाता है।

√ **यद्यत्सुखं भवेत्तत्तद् ब्रह्मैव प्रतिबिम्बनात्।**
वृत्तिष्वन्तर्मुखा स्वस्य निर्विघ्नं प्रतिबिम्बनम्।।१९।।

• इस प्रकार जो जो सुख होता है वह ब्रह्म के प्रतिबिम्बित होने से प्राप्त होता है। अन्तर्मुखी वृत्तियों में ब्रह्म का प्रतिबिम्ब निर्विघ्न उत्पन्न होता है।

√ **सत्ता चितिः सुखं चेति स्वभावा ब्रह्मणस्त्रयः।**
मृच्छिलादिषु सत्तैव व्यज्यते नेतरत् द्वयम्।।२०।।

• सत्ता, चेतना और सुख – ये तीन ब्रह्म के स्वभाव है। मृत्तिका, शिला आदि में उसका सत्ता स्वभाव प्रकट है, अन्य दो (चेतना और सुख) उसमें प्रकट नहीं होते।

√ **सत्ता चितिर्द्वयं व्यक्तं धीवृत्त्योर्घोरमूढयोः।**
शान्तवृत्तौ त्रयं व्यक्तं मिश्रं ब्रह्मेत्थमीरितम्।।२१।।

• सत्ता और चेतना – यह दोनों स्वभाव बुद्धि की घोर और मूढ़ वृत्तियों में व्यक्त है और शान्त वृत्तियों में ब्रह्म के तीनों स्वभाव व्यक्त है। इस प्रकार मिश्र ब्रह्म का निरूपण किया जाता है।

√ **अमिश्रं ज्ञानयोगाभ्यां तौ च पूर्वमुदीरितौ।**
आद्येऽध्याये योगचिन्ता ज्ञानमध्याययोर्द्वयोः।।२२।।

• ज्ञान और योग से अमिश्र ब्रह्म जाना जाता है। उन दोनों का वर्णन पहले हो चुका है। ब्रह्मानन्द प्रकरण के प्रथम अध्याय में योग और दूसरे तथा तीसरे अध्याय में ज्ञान का वर्णन हुआ है।

√ **असत्ता जाड्यदुःखे द्वे मायारूपं त्रयं त्विदम्।**
असत्ता नरशृंगादौ जाड्यं काष्ठ शिलादिषु।।२३।।

• असत्ता, जड़ता और दुःख – ये तीन माया के रूप है। नरशृंग में असत्ता तथा काष्ठ, शिला आदि में जड़ता है।

√ **घोरमूढ़धियोर्दुःखम् एवं माया विजृम्भिता।**
शान्तादिबुद्धिवृत्त्यैक्यात् मिश्रं ब्रह्मेति कीर्तितम्।।२४।।

• घोर और मूढ़ बुद्धि वृत्तियों में दुःख है। इस प्रकार माया का विस्तार है। शान्त आदि बुद्धि वृत्तियों के साथ एकता होने पर ब्रह्म 'मिश्र ब्रह्म' कहलाता है।

√ **एवं स्थितेऽत्र यो ब्रह्म ध्यातुमिच्छेत्पुमानसौ।**
नृशृंगादिमुपेक्षेत शिष्टं ध्यायेद्यथायथम्।।२५।।

• ऐसी स्थिति होने के कारण, जो पुरुष ब्रह्म का ध्यान करना चाहें वह नृशृंग की उपेक्षा कर शेष रहे ब्रह्म के लक्षणों का ध्यान करें।

√ **शिलादौ नामरूपे द्वे त्यक्त्वा सन्मात्रचिन्तनम्।**
त्यक्त्वा दुःखं घोरमूढ़ धियोः सच्चिद्विचिन्तनम्।।२६।।

• शिला आदि में नाम और रूप इन दोनों को त्यागकर सत्ता मात्रका चिन्तन करना चाहिए। घोर और मूढ़ वृत्तियों में दुःख का त्याग कर सत् और चित् का चिन्तन करना चाहिए।

√ **शान्तासु सच्चिदानन्दान् त्रीनप्येवं विचिन्तयेत्।**
कनिष्ठमध्यमोत्कृष्टाः तिस्त्रश्चिन्ताः क्रमादिमाः।।२७।।

• शान्त वृत्तियों में सत्, चित् तथा आनन्द इन तीनों का चिंतन करना चाहिए। ये तीनों ध्यान क्रम से कनिष्ठ, मध्यम और उत्कृष्ट है।

√ **मन्दस्य व्यवहारेऽपि मिश्रब्रह्मणि चिन्तनम्**
उत्कृष्टं वक्तुमेवात्र विषयानन्द ईरितः।।२८।।

• मन्द बुद्धि वाले पुरुष को व्यवहार में भी मिश्र ब्रह्म का चिन्तन करना उत्तम है। यह बताने के लिए विषयानन्द का वर्णन किया गया।

√ **औदासीन्ये तु धीवृत्तेः शैथिल्यादुत्तमोत्तमम्।**
चिन्तनं वासनानन्दे ध्यानमुक्तं चतुर्विधम्।।२९।।

• उदासीनता में तो बुद्धिवृत्तियां शिथिल हो जाने पर वासनानन्द का चिंतन हो सकता है, वह सर्वोत्तम है। इस प्रकार चार प्रकार का ध्यान कहा गया है।

√ **न ध्यानं ज्ञानयोगाभ्यां ब्रह्मविद्यैव सा खलु।**
ध्यानेनैकाग्र्यमापन्ने चित्ते विद्या स्थिरीभवेत्।।३०।।

• ज्ञान और योग से प्राप्त होने वाली ब्रह्मविद्या है, वह ध्यान नही है। ध्यान के अभ्यास से एकाग्रता आती है और चित्त में विद्या स्थिर होती है।

√ **विद्यायां सच्चिदानन्दा अखण्डैकरसात्मताम्।**

प्राप्य भान्ति न भेदेन भेदकोपाधिवर्जनात्।।३१।।

• विद्या उत्पन्न होने पर सच्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्म अखण्ड एकरस रूप में आत्मभाव से भासित होता हैं, किन्तु भेद उत्पन्न करने वाली उपाधि ा रहने पर वह भासित नहीं होता।

√ **शान्ता घोराः शिलाद्याश्च भेदकोपाधयो मताः।**

योगाद्विवेकतो वैषाम् उपाधीनामपाकृतिः।।३२।।

• शान्त, घोर, मूढ़ और शिला आदि भेद उत्पन्न करने वाली उपाधि ायां हैं। योग और ज्ञान से ये उपाधियां दूर हो जाती हैं।

√ **निरुपाधिब्रह्मतत्त्वे भासमाने स्वयम्प्रभे।**

अद्वैते त्रिपुटी नास्ति भूमानन्दोऽति उच्यते।।३३।।

• स्वयंप्रकाश तथा अद्वैत निरुपाधिक ब्रह्म तत्व भासित होने पर त्रिपुटी नहीं रह जाती, इसलिए वह भूमानन्द कहलाता है।

√ **ब्रह्मानन्दाभिधे ग्रन्थे पंचमोऽध्याय ईरितः।**

विषयानन्द एतेन द्वारेणान्तः प्रवेश्यताम्।।३४।।

• ब्रह्मानन्द नाम के ग्रंथ में यह विषयानन्द नाम का पांचवा अध्याय कहा गया है। इस द्वार से ब्रह्मानन्द में प्रवेश करो।

√ **प्रीयाद्धरिहरोऽनेन ब्रह्मानन्देन सर्वदा।**

पायाच्च प्राणिनः सर्वान् स्वाश्रितांश्छुद्धमानसान्।।३५।।

• इस ब्रह्मानन्द प्रकरण से हरि तथा हर रूप परमात्मा सदा प्रसन्न रहें और शुद्ध मन वाले अपने आश्रित सब प्राणियों का रक्षण करें।

इति ब्रह्मानन्दे विषयानन्द समाप्तः।।

ओम तत्सत्।